Rohtas Mahila College, SASARAM

Study Material: SANSKRIT

B.A. Part-2, Paper: 3

By: 1
Dr. Savitri Singh,
Associate Professor,
Deptt. of Sanskrit,
R.M.C. SASARAM

Date:
18.07.2020

Topic: शुकनासोपदेश के आधार पर राजाओं का चरित्र वर्णन / विशेषताएँ

जो व्यक्ति रात दिन निरन्तर हाथ जोड़े, अन्य सभी कार्यों का परित्याग कर इष्ट देवता के समान राजाओं की स्तुति करता है अथवा उनकी महिमा का वर्णन करता है, वे (राजा लोग) सदैव उसी पुरुष का अभिनन्दन करते हैं, उसी से वार्तालाप करते हैं, उसी को अपने पास रखते हैं, उसी का सम्वर्धन करते हैं उसी के साथ सुख से रहते हैं, उसी के लिए दानादि देते हैं; उसी से मित्रता रखते हैं, उसी के वचनों को सुनते हैं, उसी को धन लुटाते हैं, उसी का सत्कार करते हैं तथा उसी की शिष्टता का सम्पादन करते हैं।

किं वा तेषां साम्प्रतम्, येषामतिनृशंसप्रायोपदेशनिर्घृणं कौटिल्यशास्त्रं प्रमाणम्, अभिचारक्रियाक्रूरैकप्रकृतयः पुरोधसो गुरवः, पराभिसन्धानपरा मन्त्रिण उपदेष्टारः, नरपतिसहस्रभुक्तोज्झितायां लक्ष्म्यामासक्तिः, मारणात्मकेषु शास्त्रेषु अभियोगः, सहजप्रेमार्द्रहृदयानुरक्ता

भ्रातरः उच्छेद्याः ।

उन राजाओं के लिए क्या समीचीन है जिनके लिए अत्यन्त क्रूर शिक्षाओं वाला कौटिल्य शास्त्र ही प्रमाण है। मारण क्रियाओं से एकमात्र क्रूर प्रकृति वाले पुरोहित जिनके गुरु हैं, दूसरों को ठगने में संलग्न मन्त्री जिनके उपदेशक हैं, हजारों राजाओं के द्वारा उपभोग करके परित्याग की गई राजलक्ष्मी में जिनकी आसक्ति है, हिंसात्मक शास्त्रों में जिनका आग्रह रहता है तथा स्वाभाविक प्रेम से द्रवित हृदयानुरागी भाई ही जिनके समूल नाश करने के योग्य हैं।

तदेवं प्रायेऽतिकुटिलकष्टचेष्टासहस्रदारुणे, राज्यतन्त्रे अस्मिन् महामोहान्धकारिणि च यौवने, कुमार! तथा प्रयतेथाः यथा नोपहस्यसे जनैः, न निन्द्यसे साधुभिः, न धिक्क्रियसे गुरुभिः, नोपलभ्यसे सुहृद्भिः, न शोच्यसे विद्वद्भिः।

हे कुमार चन्द्रापीड इस प्रकार के अत्यन्त कुटिल और कष्टदायी हजारों क्रियाओं से कठोर बने हुए राजतंत्र में और उस महामोह रूपी अन्धकार को उत्पन्न करने वाले यौवन में तुम्हे ऐसा प्रयत्न करना चाहिए जिससे लोगों के द्वारा तुम्हारा उपहास न किया जाये, साधु पुरुषों द्वारा निन्दित न किये जा सको, गुरुजनों द्वारा धिक्कार न जा सको, मित्रों द्वारा उलाहना न दिये जाओ तथा विद्वानों द्वारा शोक के पात्र न बनाये जा सको।

→

यथा च न प्रकाश्यसे विटैः,
न प्रहस्यसे कुशलैः,
नास्वाद्यसे भुजङ्गैः,
नावलुप्यसे स्तेयकृद्भिः,
न वञ्च्यसे धूर्तैः,
न प्रलोभ्यसे वनिताभिः,
न विडम्ब्यसे लक्ष्म्या,
न नर्त्यसे मदेन,
नोन्मत्तीक्रियसे मदनेन,
नाक्षिप्यसे विषयैः,
नावकृष्यसे रागेण,
नापक्षिप्यसे सुखेन।

हे युवराज! जिससे तुम विट आदि नीच पुरुषों द्वारा प्रकाशित न किये जाओ, चतुर पुरुषों द्वारा तुम्हारा उपहास न किया जाये सर्पों जैसे कुटिल टेढ़े पुरुषों द्वारा तुम्हारी धन सम्पत्ति का उपभोग न कर लिया जाये, सेवक रूपी भेड़ियों द्वारा तुम्हारा अहित न किया जाये, धूर्त पुरुषों द्वारा तुम ठग न लिए जाओ, स्त्रियों द्वारा प्रलोभित न कर लिए जाओ, मदन द्वारा पागल न बना दिये जाओ, विषय भोगों द्वारा प्रेरित न किये जाओ, अनुराग द्वारा आकृष्ट न किये जाओ तथा सुख द्वारा लूटे न जाओ।

→